ISSN No. 2394-9996

सन 1980 के बाद के हिन्दी साहित्य में ग्राम जीवन के विविध आयाम

(रामदरश मिश्र के उपन्यास `सूखता हुआ तालाब` के सन्दर्भ में)

प्रा. मेजर डॉ. नारायण राऊत
हिन्दी विभागाध्यक्ष
श्री बंकट स्वामी महाविद्यालय, बीड

महात्मा गांधी ने कहा था कि, भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के दर्शन हमें गांव में देखने को मिलते हैं क्योंकि भारत की 70 फीसदी आबादी गाँव में रहती हैं। खेती को लगनेवाले औजार तथा जीवनोपयोगी वस्तुओं का निर्माण भी गाँव में ही छोटी-छोटी उद्योगों के द्वारा पूरा होता है। एक `स्वयंपूर्ण गाँव` की संकल्पना महात्मा गांधी का सपना था। इसलिए शहरवासियों को उन्होंने गाँव की ओर चलने को कहा था। लघु उद्योगों द्वारा गाँव की अर्थिक प्रगति होगी साथ ही अन्य विकास भी होगा, इसलिए `कुटिर उद्योग` की योजना को बढावा दिया गया। गाँव की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ तथा रीति-रिवाज, तीज-त्यौहार, शिक्षा-अशिक्षा, ज्ञान-अज्ञान, श्रद्धा - अंधश्रद्धा, जाति-भेद, शोषण-शोषकों की दमघोटु प्रवत्तियाँ, क्रूर-विदारक घटनएँ, अकाल, बाढ, नैसर्गिक - अनैसर्गिक संकटों से पीडित जन - जीवन आदि का प्रभाव हिन्दी साहित्य पर पड़ा। प्रेमचंद, प्रेमचंद पूर्व एवं प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों में इसका चित्रण किया हैं।

स्वातंत्र्योत्तर काल में पंडित जवाहरलाल नेहरूजी पंतप्रधान बने और उनके सपनों के भारत ने नया जन्म लिया। पंचवार्षिक योजना, औद्योगिकरण, यंत्रयुग, कल कारखाने, आधुनिक खेती प्रणाली आदि उद्यमशीलता ने भारतीय जीवन,और जीवन पद्धति में आमुलाग्र परिवर्तन लाया। कुटिर उद्योगों का स्थान ब्राण्डेड कम्पनियों ने लिया। मालक और मजदूर, पूँजिपति और मजदूरों के रेलचेल में रोजी रोटी की तलाश में लघु-उद्यमी अपना उद्यम् बंद करके शहरों की ओर बढ़ने लगे। इधर गाँव के गाँव खाली हुए। जो बचे थे वे भी शहरों मे जाकर वहाँ बसने के फिराक में थे। एक तरह से गाँव टूट रहे थे। शेष गाँव की हालत अच्छी नहीं थी। भ्रष्ट राजनीति, स्वार्थी घेरा बन्दी, पदलोभी प्रवृत्ति, अनैतिक स्थितियाँ, सामाजिक एवं नैतिक मूल्य विघटन के भ्रष्टाचार आदि घृणित कृत्यों से गाँव का नैतिक अधपतन होता हुआ दिखाई देता है। सन 1980 के बाद उपन्यास साहित्य में जो

बदलाव आया उसे डॉ. नरेंद्र ने स्पष्ट करते हुए कहा है, ``बीसवी सदी का अंतिम दशक तीव्र राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक बदलावों में बीच संघर्षरत भारतीय मनुष्य की आहत अदमनीय जिजीविषा का दशक भी रहा है। इसी कालखण्ड में जहाँ स्त्रीयाँ और दलित वर्ग अपने हक की लडाई में सामने आए, वही बज़ारवाद, उपभोक्तावाद, भूमण्डलीकरण और आधुनिकता की चुनौतियाँ भी सामने आई। राजनीति ने मनुष्य की सारी संवेदनाओं को अपने स्वार्थ के लिए पर्याप्त रूप से दोहन किया है।``[1]

हिन्दी में उपन्यासकारों ने ग्राम्य जीवन को विविध रूपों में गहराई के साथ प्रस्तुत किया है। रामदरश मिश्र उनमें से एक है। वे एक बहुआयमी व्यक्तित्व सम्पन्न साहित्यकार है। हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं पर आपने साधिकार लेखन किया है। आपके ग्यारह उपन्यास बहुचर्चित है। ``आपका व्यक्तित्व हो या रचनाएँ, उनकी विशेषताएँ ही यह है कि उनमें बनावट कम से कम है और सहजता ही उसका प्राण है। उनकी हर रचना एक सीधे-साधे लेकिन संवेदना में गहरे धँसे आदमी का बयान है।... आपके रचना संसार का अर्जित सत्य यह हैं कि जो सादा है वहीं सुंदर है और शक्तिशाली भी है।``[2] `पानी के प्राचीर` `जल टूटता हुआ`, उपन्यास की तरह `सूखता हुआ तालाब`, एक उपन्यास है। `सूखता हुआ तालाब` जिसका प्रकाशन स.न. 1988 में हुआ। इस उपन्यास में रामदरश मिश्रजी ने जीवन मूल्यों में आ रहे परिवर्तन को बखूबी अभिव्यक्त किया है। गाँव में भ्रष्ट राजनीति के कारण सामान्य व्यक्ति का जीवन नरकमय हो गया है। इस नाटकीय जीवन से त्रस्त होकर उपन्यास का नायक देव प्रकाश जो पॉच बरस पहले स्टेशन मास्टर को पीट, नौकरी को लात मारकर अपनी खेती में गाँव की स्वाभिमानपूर्ण जिन्दी जी ने का स्वप्न लेकर आते हैं लेकिन गॉव की दयनीयता को अपने में अनुभव करते है अपितु टूटकर गाँव से फिर शहर की ओर चल पडते हैं। इसकी वजह भ्रष्ट राजनीति और उससे उपजी विविध सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक समस्याएँ और उससे जूझता ग्रामस्थ हैं। गाँव मे धर्मेद्र जैसे चरित्रहीन, पाखण्डी मास्टर है, मोतीलाल जैसे मुखौटेबाज कम्यूनिस्ट नेता है, तो दयाल, शामदेव, शिवलाल, रामलाल जैराम जैसे कई कसाइयाँ है, कोई धूर्त लम्पट, कोई चाल बाज हैं जो सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए जी रहे हैं।

आज गाँव की स्थिति ऐसी हो गई है कि कोई किसी के कहने पर कही आग लगा देता है, जानवर चूरा लेता हैं या किसी की बहु बेटी के अवैध गर्भ की घोषणा करता फिरता है। शिवलाल उच्चभ्रू ब्राह्मण है लेकिन हरिजन टोले की

औरतों से छेडखानी करता है उनसे शारीरिक अनैतिक संबंध रखने में उन्हें कोई परहेज नहीं इसलिए रवींद्र कहता है, ``शिवलाल बाबू, कौन नहीं जानता कि वह हरिजन स्त्रियों की फुफती खींचता घूमता है। रंडुआ है न यह सब नही करेगा तो क्या करेंगा? लेकिन पतिहा बना घूमता है।``[3] गाँव में दलित समाज की हालत बहुत खराब और गंभीर बनी हैं। आज़ादी के बाद अस्पृशता, छूत-अछूत निर्मूलन के लिए अभियान चलाये गये, नेताओं ने कानून बनाये लेकिन फिर भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ, आज भी हरजिन घुरपतरी का बेटा मूरतीया कुएँ पर पानी भरने जाता हैं तो शिवलाल ब्राह्मण का बेटा रामलाल कई झापड उसके गालों पर रसीद कर देता है। लेकिन मुरतीया को न्याय नहीं मिलता उल्टा उसे ही कोसा जाता है। गाँव का नेता मोतीलाल कहता है, ``अरे जाने दिजिए, थप्पड खा गया तो कोन साला मर गया अब चमार सियार के लिए पट्टीदार से लडाई करने जाऊ। जब गाँव के लोग छुत-छात मानते हैं तो थोडा ठहकर पानी भरता मुरतिया।``[4] आज देशमें कानून के रहते हुए भी देश के नेता ऐसा विचार करते हैं तो हरिजन उद्धार कैसे होगा? यह एक गंभीर समस्या है। नारी का जीवन तो पशुओं से भी गया बीता है। पहले गाँव की एक घर की बेटी सबकी बेटी होती थी और इज्जत - आबरू की सब कद्र करते थे, लेकिन आज स्थिति बदल गई है। ओछी जाति की लडकी हो या ओरतों पर डोरे डालना, छेडना, गाली-गलोच करना, पीटना, इतना ही नहीं उनके साथ शारीरिक संबंध रखना, गर्भ हुआ तो उसे गीराने की तरकीबे ढुंढना, गर्भ गीराना आदि घृणित कृत्य करना गाँव के जाहिल लोगों को मज़ाक लगता है। इसके खिलाफ़ कोई आवाज़ भी नहीं उठाता यदि कोई माई का लाल सामने आये तो उसे खत्म करते है या उसे बदनाम करके ज़लिल करते हैं।

गाँव की चमार चेनइया की शादी हुए कई साल हुए है, लेकिन उसका गौना नहीं हुआ, उसका पति उसे ले जाता नहीं, हरजाई माँ उसे भेजना नहीं चाहती क्योंकि उसके बुढ़ापे का एक मात्र वह सहारा है इसलिए गाँव के शिवलाल ब्राह्मण, घरमेन्दर मास्टर, दयाल जैसे वासना के भूखे लालची दरिंदों के सामने चंद रूपयों के लिए बेंच देती है। वासना के ये तीनों दरिंदे चेनइया का माँस नोंचकर उसे गर्भवती करके छोड देते है। बदहवास चेनइया जब उसका पति उसे पट्टीदार के सामने अपमानित करता है और पट्टीदार उसे गर्भ गिरवाने को कहते हैं तब भी वह अपना गर्भ नहीं गिरवाती और न ही उसके नाजायज बाप का नाम बतलाती है। गाँव वालों के धूर्त, पाखण्डी, स्वार्थी, घृणित मानसिकता से त्रस्त चेनइया बेचारी अपने पेट में बढ़ रहे अंकुर के लिए गाँव से चली जाती है। उसकी यह टूटन और अकेलापन उसके अंतरिक घुटन का द्योतक है। यह देव बाबा से कहती है, ``बाबा,

गाँव सचमुच रहने लायक नहीं है, मैं गाँव से भाग रही हूँ। गाँव ने मुझे बेसहारा बनाकर छोड दिया, सब जान लेने पर उतारू हैं।``[5] वासना की शिकार केवल चमार चेनइया ही नहीं बल्कि गाँव की कुलीन घर की कुँवारी लडकी कलावती जो ब्राह्मण शिवलाल की सुपुत्री है जिसके साथ धर्मेंद्र मास्टर के शारीरिक संबंध हैं और वह गर्भवती हैं। गाँव में यह बात हवा के साथ फैल जाती है। शिवलाल माथा पीटता हैं तो रामलाल कलावती को पीटता है। धर्मेंद्र दोषी है लेकिन उसे बचाने स्वयं रामलाल कलावती के मुख से, रविंद्र को फँसाने के लिए कहलवाता है कि उसके गर्भ में रविंद्र का अंश हैं। खारीज होता हैं और तब कानून का रखवाला घूस खानेवाला दारोगा धर्मेद्र को बंदी बनाने के बजाय छोड देता है। गाँव में जिनके पास पैसा है, वह कुछ भी कर सकता है, इज्जत - आबरू उनके लिए कोई मायने नही रखती इसलिए शिवलाल कलावती का गर्भ अच्छे डॉक्टर के पास गिरा देता है। और कुछ हुआ ही नहीं इस अंदाज में फिर वही जिन्दगी शुरू करता है। चेनइया ओर कलावती के साथ जो कुकर्म हुआ इसमें नाते-रिश्ते, संबंधों के बीच नहीं हुआ जब कि गाँव का मोतीलाल कम्यूनिस्ट नेता अपने ही परिवार में अपने छोटे भाई की विधवा बहू के साथ अवैध संबंध रखता है। इस पर उसकी पत्नी जोर जोर से चिल्लाती, ``इस रांड ने मेरे मरद को फांस रखा है, इसलिए तो ये बार-बार इसका पच्छ लेते हैं और मुझे बार-बार नइहर भेज देते हैं।``[6] जलेसर की माँ भी कहती हैं, ``पापी सब कुकरम करतें हैं... घर-घर में रॉंडे बैठी हैं और ससुर - भसुर भी नहीं देखती।``[7] जब गाँव में इसकी चर्चा फैल जाती है तो मोतीलाल आसानी से रातोरात ओझा सोखा बुलाता हैं, गाँववालों की लल्लो-चप्पो करता है और गाँव के भ्रष्ट तथाकथित बडबोलों को दावत देता है। मिश्रजी ने उसके चरित्र के माध्यम से आज के नेताओं की नपुंसकता, अस्पष्टता, स्वार्थवादिता एवं छल-छद्म जैसे घृणित प्रवृत्ति को स्पष्ट किया है। धार्मिक अनुष्ठान की बात करें तो शिवलाल जैसा धूर्त पाखण्डी आदमी अपने घर में हरिवंश पुराण की कथा का अयोजन शुद्ध आध्यात्मिक दृष्टि से नही करता अपितु खाली समय को काटने एवं अपने पुत्र की सन्तान कामना से करता है। इस अवसर पर कीर्तन मण्डली का आयोजन धर्मेंद्र और दयाल जैसे पापी करते हैं लेकिन कीर्तन शुरू होने से पहले ही अपने खेत में चेनइया चमार की अस्मत लुटते हैं और झूठ बोल कर छिपाते भी है। कथा के बाद प्रसाद बाँटते समय चेनइया के भाई का हाथ प्रसाद को छू जाता है तो बदले में धर्मेंद्र मास्टर कडाक से गाल पर तमाचा मारता है। यह कैसी विडम्बना है कि, अस्मत लुटते समय धर्मेंद्र को चमारन चेनइया का स्पर्श चल सकता है लेकिन उसके भाई का अनजाने में प्रसाद को स्पर्श क्यों नही चल सकता? मिश्रजी ने

हमारे सामाने हमारी ढकोसलापूर्ण धार्मिकता, अस्पृशता एवं हमारा आन्तारिक सामाजिक यथार्थ सभी कुछ प्रस्तुत किया हैं।

स्पष्ट है, गाँव आज के गाँव नहीं रहे हैं। न कही मानवता हैं और न कोई मूल्य बस केवल सुविधापरक समझौता। इन बदलते संदर्भों में अपनी कुछ ख्वाईशे, सपने, कुछ गाँव को देने की आशा में आया हुआ देवप्रकाश निराशा में डूबा हुआ, अकेला ओर आन्तरिक टूटन के साथ वापस शहर की ओर जा रहा है। उसे अपने बेटे के वाक्य सुनाई देते है, ``बाबूजी, इस गाँव में या तो हिज़डा जी सकता है या बदमाश... पहले गाँव में दो चार-उचक्के होते थे, अब सारा गाँव हो गया है। पहले दो-एक तरह की बदमाशियाँ होती थी अब तरह-तरह की होती है।``[8] कैसा बीहड हो गया है ग्रामीण परिवेश? बिल्कुल `सूखता हुआ तालाब` की तरह। डॉ. ज्ञानचंद गुप्त लिखते हैं, सूखता हुआ तालाब` ग्रामीण जीवन की सामूहिक जिन्दगी में लगे धुन और उसमें व्याप्त टूटन एवं विभिन्न विसंगितयों का ऐसा चित्र है जिसमें समस्त गाँव अपने आडम्बरों, अपने रीति-रिवाजों एवं अपनी छवियों- अछवियों को लेकर प्रस्तुत हुआ है।... सामूहिक जन-जीवन की टूटन का प्रतीक है- `रामी तालाब`, जिस पर कभी कथा वार्तायें होती थी, धार्मिक अनुष्ठानों का समापन शोभा बढ़ाया करता था, लोग मनौतियॉ मानते थे, उसके पारदर्शी जल में स्नान किया करते थे। विशिष्ट सांस्कृतिक अवसरों पर अच्छी-खासी स्नानार्थियों की भीड़-भाड होती थी। लेकिन आज वही रामी तालाब दुर्गन्धयुक्त गन्दे पानी का तालाब है जिससे चारों ओर सड़ांध फैलती है। इस तालाब का सूखना गाँव के पुराने मूल्यों का सुखना है, कीचड़ के रूप में बचे है- अज्ञान और अंधविश्वास तथा सड़ांध का फैलना। यहाँ की जिन्दगी में उत्पन्न ईर्ष्याद्वेष एवं पारस्परिक वैमनन्स का प्रतीक है। ××× ××× वस्तुतः रामी तालाब गाँव की टूटती जिन्दगी का प्रतीक बन गया है।``[9]

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि, `सूखता हुआ तालाब` रामदरश मिश्रजी का बहुचर्चित एवं बहु आयामी उपन्यास हैं जहाँ ग्रामीण जीवन में आये बदलाव को लेखक ने पूरी गरीमा और क्षमता के साथ प्रस्तुत किया है। जहाँ गाँव का नैतिक पतन ही नहीं हुआ है बल्कि लोगों की संवेदनाएँ भी मर चूकी हैं ऐसा लगता है।

संदर्भ सूची :-

1) हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ. नगेंन्द्र

2) रामदरश मिश्र एक अंतर्यात्रा : प्रकाश मनु

3) सूखता हुआ तालाब : रामदरश मिश्र : पृ.17

4) वही : पृ. 17

5) वही : पृ. 79

6) वही : पृ. 37

7) वही : पृ. 36

8) वही : पृ. 46,73

9) आँचलिक उपन्यास : संवेदना और शिल्प : डॉ ज्ञानचन्द गुप्त :